MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (COMPOSITE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - II - PAPER - III

Time : 2 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 50**

विभाग 1 : गद्य

उ.1. **(क) निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर सूचनानुसार निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए ।** **(6)**

1) आकलन कृति **2**

कृति पूर्ण कीजिए।

खोए हुए आदमी के गीत से प्रभावित होने वाले

- गाँव की गाय-भैंसे
- गाँव के बच्चे
- गाँव के कुत्ते
- गाँव के बड़े बुजुर्ग

2) शब्द संपदा

i) **लिंग बदलिए।** **1**

(1) गाय - **बैल** (2) कुत्ता - **कुतिया**

ii) **वचन बदलिए।** **1**

(1) तितलियाँ - **तितली** (2) भैंसा - **भैंसें**

3) स्वमत अभिव्यक्ति **2**

सुरीली आवाज किसी भी व्यक्ति की पहचान होती है। वाणी व्यक्ति के व्यक्तित्व की भी पहचान होती है। सुरीली और मधुर आवाज हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है। सुरीली आवाज लोगों पर अपना प्रभाव निर्माण करती है। लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार आदि महान गायकों की आवाज ने आज भी लोगों को अपना दीवाना बनाए रखा है। इसलिए स्वर कोकिला लता दीदी बड़े शान से कहती हैं - 'मेरी आवाज ही मेरी पहचान है।' सुरीली आवाज के कारण कई व्यक्तिओं को सफलता मिली है। कई लोगों को यश, नाम, कीर्ति, धन आदि सुरीली आवाज के कारण प्राप्त हुआ है। इसलिए कहा गया है कि व्यक्ति की आवाज उस व्यक्ति की पहचान होती है।

उ.1. (ख) निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर सूचनानुसार निम्नलिखित कृतियाँ पूर्ण कीजिए । (6)

1) आकलन कृति

संजाल पूर्ण कीजिए। 2

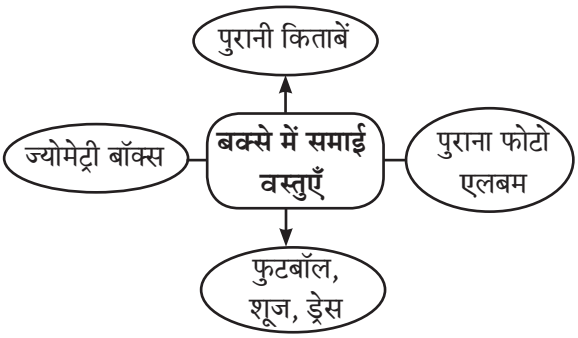

2) शब्द संपदा

i) **निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए। 1**

(1) बक्सा - **डिब्बा** (2) अर्जी - **प्रार्थनापत्र, निवेदन**

ii) (1) पॉलीथिन (2) कोर्स (3) फुटबॉल (4) बॉक्स (5) एक्स्ट्रा (6) ड्रेस (7) शूज **1**

3) स्वमत अभिव्यक्ति 2

बचपन के दिन बहुत प्यारे होते हैं। वे कभी भुलाए नहीं जा सकते। जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, वैसे-वैसे बचपन के दिन पीछे छुट जाते हैं। फिर भी हम बचपन के उन यादगार पलों को नहीं भूल सकते हैं। बार-बार हमें उनकी याद आती रहती है। बचपन की अपनी मधुर यादों में माता-पिता, भाई-बहन, यार-दोस्त, स्कूल के दिन, मौज-मस्ती आदि सब कुछ याद आता रहता है। बचपन में दिन भर गुल्ली-डंडा खेलना, दोस्तों के साथ धूम मचाना, आम के पेड़ पर चढ़ना आदि के स्मरण से 'कोई लौटा दे मेरे वे बीते हुए दिन' इस गीत की याद आ जाती है। बचपन में सभी चिंतामुक्त जीवन जीते हैं। बचपन में खेलने व उछलने-कूदने में बड़ा आनंद आता है। यही कारण है कि सबको बचपन के दिन सुहावने लगते हैं।

विभाग 2 : पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : 1

1) आकलन कृति

i) **कृति पूर्ण कीजिए। 1**

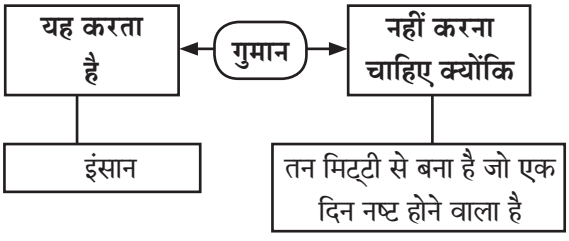

ii) **उचित शब्द लिखिए।** 1

(i) घोंसला उजड़ने पर रोने वाला - **पखेरू या पंछी ।**

(ii) स्वयं पर गुमान करने वाला - **इंसान ।**

2) **शब्द संपदा**

निम्नलिखित तद्‌भव शब्द का तत्सम शब्द लिखिए। 1

(i) माटी - **मृदा** (ii) सपना - **स्वप्न**

3) **स्वमत अभिव्यक्ति** 2

आजकल शहरों को बसाने के लिए बड़े स्तर पर वृक्षों की कटाई हो रही है। इसके कई दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। अंधाधुंध पेड़ काटे जाने के कारण ऑक्सीजन की मात्रा कम हो रही है तथा हवा प्रदूषित होती जा रही है। शहरों में वायु-प्रदूषण की समस्या सबसे ज्यादा बढ़ गई है। लोगों को अस्थमा जैसी साँस लेने की समस्या, हृदय रोग आदि हो रहे हैं। पेड़ों की कटाई करने के कारण वन्यजीवों का अस्तित्व भी खतरे में पड़ गया है। कई प्रजातियाँ विलुप्त हो गई हैं और कुछ विलुप्त होने के कगार पर हैं। पेड़ों की कटाई का प्राकृतिक जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव पड़ रहा है। जिस कारण ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या उत्पन्न हो रही है। तापमान में वृद्धि हो रही है। पेड़ों की कटाई की वजह से भूमि का क्षरण हो रहा है। इंसान हरी-भरी जिंदगी से वंचित हो गया है। उसका जीवन परेशानी से भर रहा है।

उ.2. **(छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) **आकलन कृति**

समझकर लिखिए। 2

मेघों के बरसने से हुए परिवर्तन

- बाग-बगीचे मुस्कराने लगे।
- ताल-तलैया मुस्कराने लगे।
- पेड़ भी अपनी मस्ती में झूम-झूमकर गीत गाने लगे।
- पवन भी चारों ओर बहने लगी।

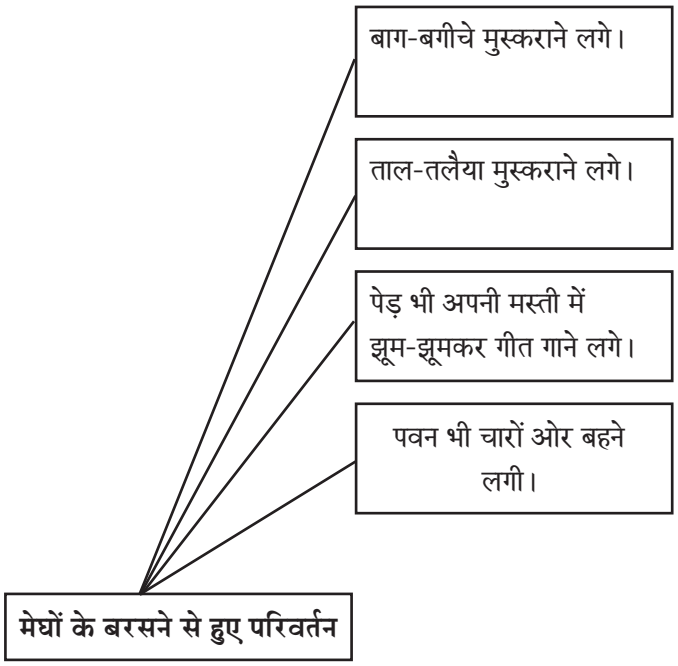

2)	**शब्द संपदा** **उपसर्ग व प्रत्यय लगाकर शब्द लिखिए।** (i) सुगंध — **गंध** — गंधहीन (ii) असफल — **सफल** — सफलता	**1**
3)	**स्वमत अभिव्यक्ति** वर्षा ऋतु समस्त ऋतुओं की रानी है। बारिश होते ही चारों ओर हरियाली छा जाती है। वर्षा होने से तालाबों और नहरों में पानी भर जाता है। सागर अपनी मस्ती में लहरों के साथ नर्तन करता रहता है। वर्षा से सूखे पेड़-पौधों में भी जीवन आ जाता है। संपूर्ण वातावरण खुशनुमा हो जाता है। मिट्टी से सोंधी महक आनी शुरू हो जाती है। यह महक हमारे चित्त को प्रसन्न कर देती है। बारिश के बाद कृषकों में उल्लास बढ़ जाता है और वे अपने खेतों में लगन के साथ जुट जाते हैं। मोर प्रसन्न होकर नाचने लगते हैं और मेंढक टर्र-टर्र की आवाज करते रहते हैं। इस प्रकार बारिश के बाद प्रकृति की शोभा देखने लायक होती है।	**2**
	विभाग 3 : व्याकरण	
उ.3.	**सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	
1)	**निम्नलिखित शब्दों में से मानक वर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर लिखिए ।** i) पत्थर ii) कुरीति	**1**
2)	**निम्नलिखित अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** छि! - <u>**छि!**</u> कितनी गंदगी है।	**1**
3)	i) **काल परिवर्तन कीजिए ।** किसी प्राकृतिक मनोरम दृश्य को देखना चाह रहा था।	**1**
	ii) **काल पहचानिए ।** अपूर्ण भूतकाल ।	1
4)	i) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **बिना सिर-पैर की बातें करना** - निरर्थक बातें करना। **वाक्य** : जो कुछ भी बोल रहे हो उसका कुछ प्रमाण होना चाहिए अन्यथा बिना <u>**सिर-पैर की बातें करने से**</u> कुछ भी हासिल नहीं होगा।	**1**
	ii) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए ।** सरकस की गुड़ियों के करतब देखकर दर्शक <u>दंग रह गए</u>।	**1**
5)	i) **निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए।**	**1**

संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
सदा + एव	सदैव	स्वर संधि

ii) **निम्नलिखित शब्दों का विच्छेद कीजिए और भेद लिखिए।** **1**

शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
दुस्साहस	दु: + साहस	विसर्ग संधि

6) i) **निम्नलिखित वाक्य का अर्थ के अनुसार भेद लिखिए।** **1**

सुबह उठता हूँ तो थोड़ी ताजगी महसूस होती है। - **विधानार्थक वाक्य ।**

ii) **सूचना के अनुसार वाक्य का प्रकार बदलिए ।** **1**

परिश्रमी छात्र अवश्य सफल होंगे।

विभाग 4 : रचना

उ.4. **अ)**

1) **निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए ।** **4**

दिनांक : ४ अप्रैल २०१८

प्रति,

श्री व्यवस्थापकजी,

स्टूडेंट्स फ्रेंड्स,

मुंबई - ४०० ०२८।

विषय : पुस्तकालय के लिए पुस्तकें मँगवाने हेतु निवेदन पत्र ।

महाशय,

हमें अपने पुस्तकालय के लिए निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है। यह पत्र प्राप्त होते ही ये पुस्तकें ऊपर लिखे पते पर वी.पी.पी. द्वारा भेजने की कृपा करें। आपके नियमों के अनुसार पेशगी के रूप में दो सौ रुपए का पोस्टल ऑर्डर इस पत्र के साथ भेजा जा रहा है। शेष रकम की वी.पी.पी. यहाँ पहुँचते ही छुड़ा ली जाएगी।

क्र.	पुस्तकों के नाम	लेखक	प्रतियाँ
(१)	बेगम का तकिया	पं. आनंदकुमार	२
(२)	राबिया	पं. आनंदकुमार	३
(३)	चंद्रगुप्त	जयशंकर 'प्रसाद'	५
(४)	चंद्रगुप्त-समीक्षा	डॉ. श्रीहरि	५
(५)	रसलीन और उनका काव्य	डॉ. रामसागर सिंह	२
(६)	इंद्रधनुष	रवींद्र गुप्त	५

उपर्युक्त पुस्तकों के अलावा आप के पास अन्य नई किताबों की या पत्र-पत्रिकाओं की सूची होंगी, तो वह हमें अवश्य भेज देना। आशा करता हूँ कि आप उपर्युक्त पुस्तकें जल्द-से-जल्द भेजने की व्यवस्था करेंगे।

धन्यवाद!

भवदीया,
कल्याणी कंदलगाँवकर
ए-२, अपर्णा वैभव,
दादर (पश्चिम),
मुंबई - ४०० ०२८।
ई-मेल आईडी : kalyanik93@gmail.com

अथवा

दिनांक - २७ मई, २०१८
प्रिय मनोज
मधुर स्मृति!

बहुत-बहुत बधाई हो! मुझे अभी-अभी तुम्हारे मित्र मानव का टेलिफोन संदेश मिला। पता चला कि तुमने इस वर्ष नौंवी कक्षा में अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अगले वर्ष तुम्हारी बोर्ड की परीक्षा होनी है। आशा है, उसमें भी तुम अपने माता-पिता का नाम उज्ज्वल करोगे।

मनोज! मुझे इस समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई है। मन में इतनी खुशी हुई कि सारे जरूरी काम छोड़कर तुम्हें बधाई-पत्र लिख रहा हूँ। मेरी ओर से हार्दिक बधाई। ईश्वर करें तुम दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करों। मम्मी-पापा भी तुम्हें आशीर्वाद दे रहे हैं।

पुन: बधाई के साथ।
तुम्हारा मित्र,
सुजल
नाम : सुजल सिंह
पता : अशोक नगर,
वी. पी. रोड,
नाशिक।
ई-मेल आईडी : sujal123@gmail.com

2) निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए ।
(लगभग ८० से १०० शब्द) **4**

मेल-मिलाप

रामपुर नामक गाँव में घनश्याम नाम का एक जौहरी रहता था। वह अपने दाहिने हाथ की एक ऊँगली में सोने की एक अँगूठी पहनता था। उसे उस अँगूठी से बेहद लगाव था। अत: कभी-भी वह उसे अपनी ऊँगली से अलग नहीं करता था। वह अपने परिवार से अलग रहता था। उनके लिए अलग घर की व्यवस्था थी। वह उन्हें मिलने कभी नहीं जाता था।

एक दिन जौहरी को मिलने के लिए पड़ोस के गाँव से एक व्यक्ति आया। उसके पास एक थैली थी। उस थैली में एक घोड़े की तस्वीर थी । उस तस्वीर को बाहर निकालकर उसने जौहरी से कहा, ''मालिक, यह बहुत ही अद्‌भुत तस्वीर है। यह मुझे साधु महाराज ने दी है। मैं इसे बेचना चाहता हूँ। जो कोई इस तस्वीर को खरीद लेगा उसका पूरा जीवन बड़े आराम से कटेगा और उसे किसी भी प्रकार की विपत्तियों का सामना

नहीं करना पड़ेगा। उस व्यक्ति की बातें सुनकर जौहरी ने जिज्ञासा से पूछा, ''तो फिर इसका मूल्य कितना है ?'' उस व्यक्ति ने बताया सिर्फ पाँच जल की बूँदे और वह भी वे बूँदें एक दूसरी से अलग होनी चाहिए यानी एक साथ मिलनी नहीं चाहिए। यह सुनकर जौहरी हैरान रह गया। थोड़ी देर तक सोचने के बाद उसने तुरंत अपने नौकर के जरिए एक गिलास में पानी मँगवाया। उसने एक प्लेट में पानी की बूँद गिराने की कोशिश की, पर उसके प्रयत्न निष्फल रहे क्योंकि पानी की बूँदें एक-दूसर से मिलने लगी। कई बार कोशिश करने के बाद जौहरी थक गया। वह व्यक्ति मन ही मन हँस रहा था। हैरान होकर जौहरी ने उसकी ओर देखा। तब तपाक से उस व्यक्ति ने कहा, ''एक-दूसरे के साथ मिलना तो बूँदों का स्वभाव है। फिर इंसान होकर तुम क्यों अपने परिवार वालों से अलग रहते हो ?'' उस आदमी की बातें सुनकर जौहरी की आँखें खुल गई और वह तुरंत अपने परिवार वालों के पास चला गया।

सीख - हमें जीवन में मेल-मिलाप से रहना चाहिए।

अथवा

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उस पर चार प्रश्न तैयार कीजिए कि जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हो ।

(i) जापान के बारे में स्वामी रामतीर्थ ने क्या कहा ?
(ii) स्वामी रामतीर्थ की बात सुनकर जापानी युवक फल क्यों ले आया ?
(iii) जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ से फलों के दाम क्यों नहीं लिए ?
(iv) युवक ने स्वामी रामतीर्थ से क्या प्रार्थना की ?

उ.4. **आ) निम्नलिखित जानकारी के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए । (लगभग ५० से ६० शब्द)** **4**

खुश खबर! खुश खबर! खुश खबर!

क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक : २२ जुलाई, २०१८ से २४ जुलाई, २०१८
समय : सुबह ठीक ९:०० से ४:०० तक

स्थल : पराग विद्यालय क्रीड़ागण

खेल प्रतियोगिता

फुटबॉल	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
क्रिकेट	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
हॉकी	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
बैडमिंटन	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
खो-खो	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
टेबल टेनिस	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
कैरम बोर्ड	: सीनियर व जूनियर ग्रुप

सीनियर ग्रुप : उम्र : १४ से १६ तक

जूनियर ग्रुप : उम्र : ११ से १३ तक

संपर्क :
क्रीड़ा अध्यापक
(महेश गावडे)
पराग विद्यालय

उ.4.	इ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए । (लगभग ७० से ८० शब्द)	4

1) **यदि मैं शिक्षा मंत्री होता.....**

जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्त्व है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक व आर्थिक विकास होता है। शिक्षा मंत्रालय द्वारा देश के पाठ्यक्रम एवं शिक्षा प्रणाली पर ध्यान रखा जाता है। शिक्षा मंत्री शिक्षा मंत्रालय के प्रमुख होते हैं। देश में शिक्षा प्रणाली सुचारू रूप से कार्यान्वित हो रही है या नहीं, इस पर ध्यान एवं नियंत्रण रखने का कार्य शिक्षा मंत्री करते हैं। सचमुच शिक्षा मंत्री एक बहुत बड़ा महत्त्वपूर्ण पद है।

मैं भी भविष्य में बड़ा होकर देश का शिक्षा मंत्री बनना चाहता हूँ। जब मैं शिक्षा मंत्री बनूँगा; तब मैं संपूर्ण देश में शिक्षा का कार्य सुचारू रूप से हो रहा है या नहीं इस पर ध्यान रखूँगा। देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में एकरूपता लाने हेतु में सभी शिक्षा मंडलों का एकीकरण करूँगा; जिससे देश में एक ही प्रकार की शिक्षा प्रणाली सभी के लिए उपलब्ध हो सके।

आज कई स्कूल एवं महाविद्यालयों की हालत बहुत ही दयनीय है। कई स्कूलों में संसाधनों की कमी है। कई स्कूलों में छात्रों को बैठने के लिए कुर्सियाँ तथा पर्याप्त शैक्षणिक साधन भी नहीं है। कई स्कूलों में पर्याप्त मात्रा में शिक्षक उपलब्ध नहीं हैं। इन सारी समस्याओं को तुरंत सुलझाने के लिए मैं शिक्षा मंत्री होने के नाते एक समिति की स्थापना करूँगा। इससे किसी भी नगर या गाँव का छात्र शिक्षा के मूलभूत अधिकारों से वंचित नहीं रह पाएगा।

संपूर्ण देश के पाठ्यक्रम में मैं समयानुसार परिवर्तन करने हेतु विद्वान सदस्यों की एक समिति गठित करूँगा; ताकि भूमंडलीकरण एवं विज्ञान-तकनीकी के इस युग में भारतीय छात्र आगे ही आगे बढ़ सकें।

आज हमारे देश में शिक्षकों को दिया जाने वाला वेतन बहुत ही कम है। इसके लिए मैं शिक्षकों के लिए एक नए वेतनमान प्रणाली की शुरुआत करूँगा, जिससे अच्छे से अच्छे उम्मीदवार शिक्षा क्षेत्र से जुड़कर ज्ञान के प्रचार-प्रसार का पवित्र कार्य करने के लिए आगे आ सकें।

अब तो बस, यही मेरा ध्येय है। इसे साकार करने के लिए सर्वप्रथम मुझे मन लगाकर पढ़ना होगा। फिर मैं अपने विचारों को वास्तविक रूप में परिवर्तित कर सकता हूँ।

2) **फटी पुस्तक की आत्मकथा ।**

"ज्ञान का अपरंपार खजाना,
हर पल सबको लुटाती हूँ,
भेदभाव नहीं मन में मेरे,
सबको मैं अपनाती हूँ ।"

मुझे पहचानना बहुत कठिन नहीं है । बचपन से लेकर अब तक किसी न किसी रूप में मैं आपके करीब रही हूँ । जी ! मैं एक पुस्तक बोल रही हूँ । मेरी जीवन कहानी फिल्मी कलाकारों की जिंदगी के समान रोचक । आकर्षक नहीं है, पर भाव से भरी है ।

पेड़ की छालों की लुगदी व अन्य रासायनिक मिश्रण के द्वारा मुझे कागज का रूप दिया गया। विरंजक चूर्ण से साफ करके मुझे लिखने के लायक बनाया गया। इसके बाद छपाईखाने में मुझे लंबी प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ा। मुझे वहाँ का वातावरण अच्छा नहीं लग रहा था। हर तरफ मशीनों की आवाजों से मैं जल्दी ही वहाँ से उब गई थी। वहाँ मेरे रंग-रूप को पूरी तरह निखारा गया। मुख्य-पृष्ठ को इस तरह सजाया गया था कि मैं अपनी सुंदरता पर इतराने लगी थी।

कुछ ही दिनों बाद मुझे और मुझ जैसी अन्य पुस्तकों को गाड़ी में भरकर एक आलीशान दुकान में ले जाया गया। पर वहाँ मुझे ज्यादा दिन नहीं ठहरना पड़ा। वहाँ से मुझे एक बहुत बड़े ग्रंथालय में पहुँचा दिया गया। यह ग्रंथालय भी बहुत भव्य था। वहाँ लाखों की संख्या में किताबों को व्यवस्थित ढंग से सजाया गया था। नई जगह थी कुछ दिन तो मुझे बहुत अटपटा-सा लगा। पढ़नेवालों की भीड़ थी पर सब खामोश थे। मुझे यह खामोशी अच्छी नहीं लग रही थी । काफी अकेलापन महसूस कर रही थी पर बाद में अन्य पुस्तकों से दोस्ती हो गई इसलिए सबकुछ धीरे-धीरे ठीक लगने लगा। हर रोज पाठकों की भीड़ लग जाती थी। कुछ लोग पुस्तकें हफ्ते भर के लिए अपने घर ले जाते थे। मैं नई-नवेली दुल्हन की तरह सज-धजकर काँच की अलमारी में आराम कर रही थी। लंबे आराम के बाद मैं अब ऊब चुकी थी। आखिर मेरी भी बारी आई। एक पाठक को मेरी जरूरत पड़ी। दो घंटों तक ग्रंथालय में बैठकर मेरे पन्नों को पलटता रहा। बहुत विचित्र आदमी था । जिस क्रूरता से वह पन्ने पलट रहा था, मुझे तो लगा कि अभी मेरा 'राम-नाम सत्य हो जाएगा'। मुझे बेहद पीड़ा हो रही थी। जल्दी ही मैं उसके चंगुल से बच गई।

दूसरे दिन एक युवक ग्रंथालय में आया। उसने मुझे बहुत ध्यान से देखा, फिर वह पन्नों को पलटने लगा। मेरे पन्नों पर लिखी कुछ बातें उसके काम की लगी। वह खुश हुआ परंतु बहुत आलसी था। मुझमें छपी जानकारी को अपनी पुस्तिका में लिखने के बदले उसने बड़ा ही कठोर और निर्दयी तरीका अपनाया। एक 'ब्लेड' से मेरे कुछ पन्नों को फाड़ने लगा। मैं कराह उठी। मदद के लिए पुकार रही थी, पर जैसा कि किसी शायर ने कहा है -

"पुकारता रहा किस-किस को डूबनेवाला,
खुदा थे इतने मगर, कोई आड़े न आया।"

मेरी भी चीख अनसुनी कर दी गई । एक के बाद एक करके करीब सात-आठ पन्ने फाड़े । इसके बाद धीरे-से मुझे ग्रंथपाल को सौंपकर चुपचाप चला गया। ग्रंथपाल ने मुझे अलमारी में रख दिया । मेरे जख्मों पर कोई मरहम लगानेवाला नहीं था । मैं रोती-तड़पती रही । एक दिन एक सज्जन मुझे अलमारी से निकालकर पढ़ने बैठे पर मेरी क्षतिग्रस्त अवस्था को देखकर नाक-भौं सिकोड़ने लगे और आखिर में मुझे ग्रंथपाल के हाथों सौंप दिया । ग्रंथपाल के लिए यह मालूम कर पाना मुश्किल हो गया कि आखिर मेरी इस हालत का जिम्मेदार कौन है ? जो भी हो, पर मैं अब किसी काम की नहीं थी। मुझे अधूरा समझा जाने लगा। तब से लेकर अब तक मैं अलमारी में पड़ी हूँ। लोगों को ज्ञान की रोशनी देनेवाली खुद अंधेरों में कैद हो गई । मैं आज किसी और के बुरे कर्मों की सज़ा भुगत रही हूँ । मैंने कभी सोचा नहीं था, इतनी कम उम्र में मुझे लोगों की उपेक्षा झेलनी पड़ेगी ।

एक जमाना था जब माँ-बाप पुस्तक को विद्या मानकर पूजते थे और यही संस्कार बच्चों में डालते थे पर अब सोच बदल गई है। खैर ! अब शिकायत करके भी क्या फायदा। बस, मैं आप सबसे यही कहना चाहूँगी कि पुस्तकें आपकी सच्ची साथी हैं। क्यों !

क्या हो गया ? आप तो उदास हो गए।

"क्यों है गमगीन मेरे दोस्त,
यह तो जिंदगी है।
ये हमारी चाहतों से नहीं,
अपने हिसाब से चलती है।।"

❖❖❖❖